DOI: https://doi.org/10.46632/cllrm/4/3/1

Contemporaneity of Language and Literature in the Robotized Millennium
Vol: 4(3), 2022
REST Publisher; ISBN: 978-81-936097-3-6
Website: http://restpublisher.com/book-series/cllrm/

कोरोना काल में हिन्दी कविता

विनीजा विजयन
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, केरल, भारत.
संबंधित लेखक ईमेल: vineejavijayan122@gmail.com

कोरोना महामारी के दौरान मनुष्य जब बंद कमरों में कैद रहे तब भी उसने अलग - अलग रहते हुए आपस में एक दूसरे की मदद कर सामाजिक प्राणी होने का उदाहरण प्रस्तुत किया। इस बीच साहित्य हमें बराबर कोरोना से लड़ने की ताकत देता रहा। तकनीकि ने भी हमारा भरपूर साथ दिया। प्रिंट मीडिया की अनुपस्थिति में इलैक्ट्रोनिक मीडिया खूब सक्रिय रहा। सोशल मीडिया की बदौलत हम घरों में बंद रहने के बावजूद एक-दूसरे से जुड़े रहे,फ़ेसबुक पर खूब हलचल रही। वहाँ कविताओं-कहानियों में अपने दु:ख-सुख व्यक्त किए गए। गूगल मीट , ज़ूम, फ़ेसबुक लाइव,ट्विटर, इंस्टाग्रामआदि ने लॉकडाउन में साहित्यिक समारोह-सेमीनार को संभवबनाया। इससे यह लाभ हुआ कि हर साहित्यिक कार्यक्रम लोकल के स्थान पर ग्लोबल होने लगा। घर बैठे लोग देश-विदेश से जुड़ने लगे काव्य चर्चा, काव्य गोष्ठियों, कथा पाठ, रचनाकार से मिलना-जुलना, पुस्तक समीक्षाएँ, विचार-विमर्श आम बात हो गए।समय के साथ प्रकाशकों और संपादकों ने अपनी सोच बदली और समय की नज़ाकत को देखते हुए कई पत्रिकाएँ अपना ई-संस्करण पटल पर ले आए।

हमें पता है कि साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। समय- समय पर समाज में घटित घटनाओं को लेखकों ने हमेशा अपने सृजनशक्ति के ज़रिए एक नए दृष्टिकोण के साथ हमारे सामने प्रस्तुत किया है। साहित्य और आपता का संबंध पहले से ही चलता आ रहा है। आपता चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक साहित्य मेंउसका स्थान हमेशा से ही रहा है। वह अल्बर्ट कामु की 'प्लेग' हो या फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैलाअंचल' प्लेग,हैजा,मलेरिया जैसे कई आपताओं को लेखकों ने अपने रचनाओं में दिखाया है।असगर वज़ाहत ने आजतक के एक साक्षात्कार में कहा कि "समाज में जो होता है उसका असर साहित्यकार, रचनाकार पर पडता ही है। असर पड़ता है तो वो उसे अपनी कहानी में लाता है।इसीलिए कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है।" आपता और उसके प्रभाव का चित्रण करते रचनाओं के कई उदाहरण हमारे सामने है। इस श्रृंखला में 2021 में वाणी प्रकाशन से निकली अशोक वाजपोई का'थोड़ा सा उजाला' रचना महत्व पूर्ण है।अपनी कविता 'पृथ्वी का मंगल हो' में अशोक वाजपेई आशा एवं प्रार्थना के स्वर गुंजित करते हैं एवं प्रकृति के समक्ष नतमस्तक होते हैं :"जगह नहीं है संगसाथ की/मेलजोल की ,बहस और शोर की /पर फिर भी जगह है /शब्द की ,कविता की,मंगलवाचन की" । आगे कवि अपने शब्द- संपत्ति को प्रार्थना में अर्पित करते है : "हम इन्हीं शब्दों में/ कविता के सूने गलियारे से/ पुकार रहे हैं, गा रहे हैं ,सिसक रहे हैं/पृथ्वी का मंगल हो ,पृथ्वी पर मंगल हो पृथ्वी ही दे सकती है हमें /मंगल और अभय/सारे प्राचीन आलोकों को संपुंजित कर /नई वत्सल उज्जवलता हम पृथ्वी के आगे प्रणत हैं" कोरना में मनुष्य अपने घरों में बंद रहे लेकिन प्रकृति एक पल केलिए भी नहीं रुकी । इस पर भी कविकहते है : "निर्जन में आवाज़ें हैं/शब्द नहीं हैं, लोग नहीं हैं/ नियत समय पर फिर भी हो रहा है सबेरा ।"

कवि कभी विषम परिस्थिति के समक्ष समर्पण नहीं करता है,वह जुझारुपन के साथ उस से जूझता है। आशा की किरण उसके संसार को आलोकित करती है।पंखुड़ी सिन्हा अपनी कविता 'लॉकडाउन में भारत' में इस पीड़ा की समाप्ति और सुखद अंत चाह में कहती हैं :"कविता कोई कहानी ,तो होती नहीं /कि अंत हो जिसका / लेकिन फिर भी/ मैं सुखांत चाहती हूं/ सबके लिए जिनका जीवन /कविता है या नहीं है /पहली बार /बहुत ज़रूरी है/सुखांत"हमने कोरना काल में अनगिनत लोगों को वापस गाँव भूखे, प्यासे, चलते जाते देखा सात्ता ने तब आँख मूँद रखी थी । कहीं कोई लड़की अपने सइकल पर दूर देश से अपने पिता को लेने जा रहीं थी तों कहीं कोई माँ अपने बेटे को। जिन्हें लोगों को सुरक्षित पहुँचाने का दाइत्व था वे तो खुद घर बंद हो गये।इसी पर तंज करते हुए कवि सुभाष राय साइकिल पर अपने पिता को बिठाकर गुड़गांव से दरभंगा पहुंचने वाली 15 साल की ज्योति पासवान को लिखी चिट्ठी में कहते है-"ज्योति बेटी! वे तुम्हें साइकिलिंग/ का मौका देना चाहते हैं/लेकिन अभी उन्हें भरोसा नहीं है/तुम्हारे साहस पर/तुम्हारे इरादे पर/वे तुम्हारी परीक्षा लेंगे/वे आम बच्चियों को मौका नहीं देते/ तुम भी आम होती/ पिता की निरुपायता पर रोती/और रोते राते मर जाती/तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता"।इसी तरह लीलाधर मंडलोई ने सारा डेटा होते हुए भी कुछ न करने पर व्यवस्था पर बेहद तीखा कटाक्ष किया है। 'आपको सब मालूम है' कविता में उन्होंने मेहनतकश मजदूरों की जिजीविषा और सरकारी उपेक्षा पर लिखा है-"कितना सच समझा हमें/कितनी सटीक बात की आपने/और कौन समझ सकता है इतना सूक्ष्म/कि आपके पास सारा डेटा है/ हमारी हड्डियो, मांस-मज्जा, रक्त में बहते लहू की ताकत/हमारे धैर्य, तप और बल को अकेले/आप जानते हैं/आपको मालूम है कि हम बीच सड़क में/जन सकते हैं अपना बच्चा"पिछले तीन साल हिंदी में लिखी गयी अधिकतर कविताकोरोना कालीन स्थिति की भयावहता को हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

ओम निश्चल एवं तेजेंद्र शर्मा ने मृत्यु की भीषणता एवं संत्रास को अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति दी है। ओम निश्चल का करोना-गीत करोना के कहर और खौफ को मुखरित करता है- 'कैसा समय कैसी सदी/ हर पल यहां पर त्रासदी/ एक वायरस के कोप से/ थम सी गई जीवन- नदी /दुनिया न बन जाए कहीं/बस आज की ताजा खबर/फैला करोना का कहर/ डर है बहुत आठों पहर"। मृत्यु -बोध के रचनाकार तेजेन्द्र शर्मा की ग़ज़ल में मौत और श्मशान सजीव हो उठते हैंदेखिए उनके कुछ पंक्तियाँ : "रास्तों को क्या हुआ चुपचाप है सुनसान हैं /

लग रहा है ज्यूं सड़क पर खुल गए श्मशान हैं / क़ब्र ने भी इस तरह अपना बढ़ाया दायरा / एक ही में जाने कितने रह रहे मेहमान हैं" ।जयप्रकाश कर्दम कोरोना-पीड़ा में जातीय आयाम जोड़ कर समाज को झंझोड़ते हैं एवं धर्म तथा ईश्वर की सत्ता को भी चुनौती देते हैं:" है भारतीय खून में/ सदियों से/भेदभाव का यह वायरस/ हाथों को साफ करने से कहीं ज्यादा ज़रूरी है/दिमाग में बसी/ सदियों की गंदगी को साफ करना/ शारीरिक दूरी बनाकर /सामाजिक दूरी को मिटाना "(दूरी) ।वह ईश्वर नहीं मनुष्य में विश्वास की उद्घोषणा इस प्रकार करते हैं :"आपदा में ईश्वर काम नहीं आता/काम आते हैं लोग/बांटते हैं संवेदनाएं /बांटते हैं प्यार और विश्वास/ एक दूसरे के साथ /ईश्वर और धर्म के बांटे हुए लोग"(आपदा)। आगे मृत्युजय की एक कविता पर भी नज़र ड़ालना सही रहेगा। मनुष्य के लोभ ने किस कदर उसे अकेलेपन में धकेल दिया। इस पर विचार करते कवि मृत्युंजय अपने'कोरोना समय में एक अधूरी कविता'में कहते है "छुवन, मोहब्बत ढोने की गाड़ी है/धीमी मगर मज़बूत, गहरी और ख़ूब सारी जगह वाली/जिन्हें शब्दों के राजमार्ग की कोई ज़रूरत नहीं/मन की आज़ाद राहों पर वह दौड़ती वह वक्र बंकिम चाल/ उन्हीं आज़ाद सड़कों पर दिखेंगे/ज़िंदगी की मुस्कुराहट और उदासी के/मरम छूते, दिल जगाते विविध क़िस्से/ सभ्यता के लोभ ने स्पर्श को वर्चस्व से मारा" देवी प्रसाद मिश्रकी एक कविता 'अगर हमने तय किया होता कि हम नहीं जाएगे' में कोरोना काल में पीढ़ित श्रमिक वर्ग को शब्द देते हुए कहते है "अगरहमने तय किया होता कि नहीं जाएँगे हम, तब हम यह गाना गाते :/भूख ज़्यादा है,मगर पैसे नहीं हैं/सभ्यता हमने बनाई/खिड़कियाँ की साफ़ हमने/ की तुम्हारी बदतमीज़ी माफ़ हमने/ जान लो ऐसे नहीं वैसे नहीं हैं/भूख ज़्यादा है मगर पैसे नहीं हैं/डस्टबिन हमने हटाए/ वह वजह क्या जो हमें कमतर दिखाए/क्यों लगे बे, आदमी जैसे नहीं हैं/भूख ज़्यादा है मगर पैसे नहीं हैं" विष्णु नागर की कविता '2020 में गाँव की ओर' में भी महानगरों से पलायन कर गाँव की तरख बढे मज़दूरों के दिल की यादनाओं को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। "सुबह तब होगी /जब गाँव आ जाएगा /रोना तब आएगा /जब गाँव आ जाएगा /थकान तब लगेगी /बेहोशी तब छाएगी /जब गाँव आ जाएगा /हाथ में बीड़ी नहीं /चाय का सहारा नहीं होगा /800 मील दूरी फिर भी /पार हो जाएगी /गाँव आ जाएगा /एक नर्क चला जाएगा /एक नर्क आ जाएगा /अपना होकर भी /जो कभी अपना नहीं रहा /वह आसमान आ जाएगा /गाँव आ जाएगा /एक दिन फिर लौटने के लिए /गाँव आ जाएगा /फिर आँधी बन लौटने के लिए /गाँव आएगा /मौत आ जाएगी /शहर की आड़ होगी /गाँव छुप जाएगा" कुछ कवियों को तो कोरोना से ज्यादाहमारा सिस्टम ज़ालिम लगता है कोरोना के कई खूबियाँ बताते हुए कवि अमिताभ अपने 'कोरोना' शीर्षक की कविता में कहते है-"कोरोना घातक है, पर ज़ालिम और ज़ुल्मी नहीं। /बेचारा जानता भी नहीं कि वह जानलेवा है। /वह फैलता है, पर भीड़ की शक्ल में हत्या करना नहीं जानता। /……… चौदह दिन ही उसका जीवन है। /सबसे अच्छा है कि वह हिंदू-मुसलमान में फ़र्क़ नहीं करता। / कोई चाहे तो कोरोना से ग़रीबों को भी बचा सकता है" ।

निष्कर्ष में कहे तो यें कविताएं कोरोना काल की पीड़ा और छटपटाहट को स्वर देने के साथ तत्कालीन समाज में विद्यमान राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक संकटों को भी चित्रित करती है। कवि समाज से जुड़ा रहता है।महामारी के बहाने जनतांत्रिक मूल्यों व जनता के अधिकारों परहुई कुठाराघात की कोशिशें पर भी कवियों ने प्रकाश डाला है।। इतिहास का यह खतरनाक दोहराव चिंतित करने वाला है। कोरोना ने पूरे संसार को अपने चपेटे में लेकर एक भयावह स्थिति पैदा किया । लेकिन मनुष्य हर नाजुक सी पल को भी संघर्ष से पार कर एक नई संसार की रचना करता है। कोरोना काल मेंप्रोद्यागिकी ने सब को जोडे रखा । उपर्युक्त सभी कविताएं कहीं न कहीं आभासी पटल पर ही सुनाई गई, पढ़ी गई। लगातार कोरोना काल में सब जुडे रहे। निरंतर सामाजिक स्थितियों पर चर्चाएँ चलती रहीं। इसमें कवियों का भी अहम भूमिका रहीं।

Copyright@ REST Publisher